(4). सामान्य (Universality) OR (Generality)

न्याय-वैशेषिक दर्शन में सामान्य की परिभाषा दी गई है — "नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्"। अर्थात् 'सामान्य नित्य एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट है'।

'सामान्य' वह पदार्थ है जिसके कारण एक ही प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों को एक जाति के अन्दर रखा जाता है। उदा०- राम, श्याम, सोहन आदि विभिन्न व्यक्तियों में एक ऐसा सामान्य तत्व पाया जाता है, जिसके कारण ये सभी एक 'मनुष्य' जाति के अन्तर्गत रखे जाते हैं और इन्हें मनुष्य नाम से पुकारते हैं। यही बात घोड़े, गाय इत्यादि जातिवाचक शब्दों पर भी लागू होता है। व्यक्तिविशेष जन्म लेता है और मरता है, किंतु सामान्य नित्य है। सामान्य द्रव्यों, गुणों एवं कर्मों में विद्यमान रहता है।

इस प्रकार से उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर सामान्य की कुछ विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं —

⇒ सामान्य एक है — एक वर्ग या जाति के सभी सदस्यों का एक ही सामान्य होता है। जैसे कि, सभी मनुष्यों का एक सामान्य है - 'मनुष्यत्व'। इसी प्रकार से 'गोत्व' गौ जाति का सामान्य है। यदि एक ही वर्ग के व्यक्तियों के दो सामान्य होते तो वे परस्पर-विरोधी होते। इसलिए न्याय-वैशेषिक प्रत्येक वर्ग के लिए एक ही सामान्य मानते हैं।

⇒ सामान्य नित्य है — व्यक्ति विशेष का जन्म होता है, नाश होता है, परन्तु उनका सामान्य अविनाशी होता है। जैसे मनुष्य का जन्म एवं मृत्यु होती है, परन्तु उनका सामान्य 'मनुष्यत्व' शाश्वत है। सामान्य अनादि और अनंत है।

⇒ सामान्य अनेक वस्तुओं में समवेत रहता है — 'मनुष्यत्व' सामान्य संसार के सभी मनुष्यों में निहित है। इसी प्रकार 'पशुत्व' सभी पशुओं में समवेत है। अतः सामान्य का एक लक्षण यह भी है — 'सामान्यं नित्यमेकमनेकसमवेतम्'।

⇒ सामान्य का सामान्य नहीं होता → अकेले व्यक्ति का कोई सामान्य नहीं हो सकता। आकाश एक है। अतः आकाश का सामान्य 'आकाशत्व' को ठहराना भूल है। उसी प्रकार से जैसे, मनुष्य का सामान्य 'मनुष्यत्व' है, किंतु 'मनुष्यत्व' का कोई सामान्य नहीं होता।

⇒ सामान्य द्रव्य, गुण एवं कर्म में पाया जाता है → सभी द्रव्यों में समवेत सामान्य 'द्रव्यत्व' है, सभी गुणों में समवेत सामान्य 'गुणत्व' है और कर्मों में पाया जाने वाला सामान्य 'कर्मत्व' कहलाता है।

⇒ सामान्य का ज्ञान सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष के द्वारा संभव होता है। जब हम व्यक्ति विशेष का प्रत्यक्ष करते हैं, तब उसके अन्दर निहित 'सामान्य' का भी प्रत्यक्षीकरण हो जाता है। उदाहरण- राम, श्याम, रहीम आदि व्यक्तियों के प्रत्यक्ष से 'मनुष्यत्व' का भी प्रत्यक्ष हो जाता है।

⇒ सामान्य अन्य सभी पदार्थों से भिन्न है। यह गुण सामान्य, समवाय एवं अभाव आदि से सर्वथा भिन्न है। यह वास्तविक होते हुए भी देश और काल के परे है।

सामान्य के भेद → वैशेषिक दर्शन में सामान्य तीन प्रकार का बताया गया है — पर, अपर, परापर।

(1). परसामान्य → जो सामान्य अत्यधिक व्यापक या सबसे बड़ा हो, वह 'परसामान्य' कहलाता है। जैसे कि, सत्ता।

(2). अपर सामान्य → यह अत्यंत कम व्यापक सामान्य है। उदाहरण - गोत्व, मनुष्यत्व, घटत्व इत्यादि। 'गोत्व' केवल गौओं तक, 'मनुष्यत्व' केवल मनुष्यों तक और 'घटत्व' केवल घड़ों तक ही सीमित रहते हैं।

(3). परापर सामान्य → पर और अपर सामान्य के बीच आने वाले सभी सामान्य परापर-सामान्य कहलाते हैं। जैसे- द्रव्यत्व। 'द्रव्यत्व' सत्ता की अपेक्षा कम व्यापक है; किंतु 'गोत्व', 'मनुष्य' आदि की अपेक्षा अधिक व्यापक है।

(5). विशेष (Particularity)

विशेष वैशेषिक दर्शन का पाँचवा पदार्थ है। यह सामान्य के ठीक विपरित है। वैशेषिक दर्शन में इस (विशेष) को विशिष्ट अर्थ में लिया गया है। इस प्रकार से "नित्य तथा निरवयव द्रव्यों के विशिष्ट व्यक्तित्व, जिसके कारण वे पहचाने जाते हैं, को 'विशेष' कहा जाता है"। दिक्, काल, आत्मा, मन, पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि के परमाणुओं की विशिष्टता की व्याख्या के लिए विशेष को अपनाया गया है। ये द्रव्य निरवयव हैं। अत: इन द्रव्यों को एक-दूसरे से अलग करना कठिन है। प्रत्येक निरवयव नित्य द्रव्य विशेष के कारण एक-दूसरे द्रव्य से भिन्न होता है। एक आत्मा, मन आदि दूसरी आत्मा, मन से विशेष के कारण ही भिन्न समझी जाती है। संक्षेपत: "विशेष नित्य पदार्थों की विशेषता है"।

विशेष असंख्य हैं, क्योंकि जिन द्रव्यों में यह निवास करता है वह असंख्य हैं। विशेष अदृश्य है। वे परमाणु की तरह अप्रत्यक्ष हैं। विशेष स्वत: पहचाने जाते हैं। इस प्रकार से 'विशेष' का इस दर्शन में विशेष महत्त है इसी कारण इसका नाम वैशेषिक दर्शन पड़ा है।

वैशेषिक दर्शन में 'विशेष' को निम्न कारणों से एक स्वतंत्र पदार्थ स्वीकार गया है –

(i)- 'विशेष' एक स्वतंत्र पदार्थ है। महर्षि कणाद का कहना है कि विशेष उतना ही वास्तविक है जितना कि आत्मा या अन्य पदार्थ जिनमें वह निवास करता है। यदि नित्य द्रव्यों की सत्ता है तब उन द्रव्यों को पृथक करने वाला गुण भी वास्तविक है।

(ii)- 'विशेष' अन्य सभी पदार्थों से भिन्न है। यह न तो द्रव्य है, न कर्म है, न सामान्य और न ही समवाय। इसे अन्य किसी भी पदार्थ में अंतर्भूत नहीं किया जा सकता। इस कारण भी विशेष को एक स्वतंत्र पदार्थ कहा गया है।

सामान्य और विशेष में अन्तर :→

सामान्य एवं विशेष दोनों ही वैशेषिक दर्शन में स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकार किए गए हैं। दोनों में निम्न अंतर है –

(i). सामान्य अंतर्भावित करने वाला है और विशेष व्यावृत्त करने वाला पदार्थ है।

(ii). सामान्य से जाति का बोध होता है; किंतु विशेष व्यक्ति का बोधक है।

(iii). सामान्य 'अभेदसंबंध' का प्रतीक कहा जाता है; किंतु विशेष 'भेद-संबंध' का।

इस प्रकार से सामान्य के संबंध में भारतीय दर्शन में तीन (3) प्रकार के मत दिखाई देते हैं –

(i). नामवाद – इसके समर्थक बौद्ध दार्शनिक हैं।

(ii). प्रत्ययवाद – इसके समर्थक जैन और अद्वैत वेदांत के विचारक हैं।

(iii) – वस्तुवाद – इस मत के समर्थक न्याय-वैशेषिक विचारक हैं। इनके अनुसार सामान्य न तो नाममात्र है और न मानसिक प्रत्यक्ष ही है। सामान्य नित्य पदार्थ है, जो व्यक्तियों से भिन्न होते हुए भी उनमें समवेत रहता है। व्यक्ति विशेष मरणशील है, किंतु सामान्य नित्य एवं अमर है। वैशेषिक के अनुसार, सामान्यों जैसे (मनुष्यत्व, गोत्व, घटत्व इत्यादि) का वस्तुनिष्ठ अस्तित्व रहता है। यह अन्य द्रव्यों जैसे, पृथ्वी, पानी आदि की ही भाँति वस्तुनिष्ठ है।